मजलिस -6

ज़ाकिर : सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। अलहमदो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। अर्रमानिर्रहीम। मालिके यौमिददीन। (सलवात)

सूरए हम्द की इब्तेदाई आयतों की मैंने तिलावत की है और यकीनन हमारे बच्चे इस सूरे से वाकिफ हैं और उनको याद है और जो अरबी से नावाकिफ हैं वो भी तर्जुमे की हद तक वाकिफ होंगें कि उस सूरे का तर्जुमा क्या है लेकिन ज़रूरत थी कि हम मफहूम और मतलब तक भी पहुँच सकें और उन गहराइयों से भी कुछ वाक़िफ़ हो जायें जो इस सूरे में मौजूद हैं जिसकी इतनी अहमीयत कुरआन ने और इस्लाम ने बताई है इसलिये उसको मैंने उनवाने बयान करार दिया।

शुरू करता हूँ या सहारा लेता हूँ अल्लाह के नाम का जो रहमान भी है और रहीम भी है मैंने कल तक रहमान व रहीम के मुताल्लिक थोड़ा सा कुछ अर्ज़ किया था। अस्ल में रहमान है मुबालगे का सीग़ा जिसमे अलिफ़ और नून मुबालग़े के लिये हैं यानी बहुत बड़ा रहम करने वाला और रहीम है। सिफत मुश्शब्बे का अरबी में मतलब होता है कि जब कोई ऐसी सिफ़त पायी जाये जो ज़ात से खास रब्त व ताल्लुक रखती हो तो जब ज़ात से रब्त होगा तो वो जुदा नहीं होगी ज़ात से। तो रहमान के माअनी हैं बहुत बड़ा रहम करने वाला। और इसी बिना पर रहमान को आम करार दिया है काफिर और मोमिन सब के लिये। इतना बड़ा रहम करने वाला है जो अपनों पर भी रहम करता है और परायों पर भी रहम करता है। जो मानने वालों पर भी रहम करता है और न मानने वालों पर भी रहम करता है और रहीम का ताल्लुक मोमनीन से क़रार दिया गया है इसलिये कि इस रहमत का इलाक़ा काफिरों और मुशरिकों से क़ता हो जायेगा क़यामत में। अब क़यामत में रहम के बजाए ग़ज़बे इलाही का ज़हूर होगा उनसे रहम का इलाक़ा कट जायेगा, टूट जायेगा लेकिन जो मानने वाले है और मोमनीन, उनके साथ इलाक़–ए–रहम यहाँ भी क़ायम रहेगा और वहाँ भी कायम रहेगा। तो रहीम का मतलब क्या हुआ कि जो हमेशा रहम करने वाला जो यहाँ भी रहम करेगा और क़यामत में भी रहम करेगा (सलवात)

अब अगर इसी तफ़सील के साथ मैं बयान करता रहा तो बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम में पूरा अशरा ख़त्म हो जायेगा लेहाज़ा अब मैं कुछआगे बढ़ना चाहता हूँ। सिर्फ इतना अर्ज़ करके तमाम मुसलमानों को दावते फ़िक्र व नज़र देकर बस इतना अर्ज़ करना चाहता हूँ कि रहमान व रहीम अल्लाह की सिफ़त है और रहमान के माअनी बड़ा रहम करने वाला और रहीम के माअनी हमेशा यानी दुनिया व आख़ेरत दोनों में रहम करने वाला। अब अपने नबी के लिये कुरआन ने दोनों लफ्ज़ें इस्तेमाल कीं पहले तो इरशाद किया वमाअरसलनाका इल्ला रहमतुललिल्आलमीना ऐ नबी मैंने आपको आलमीन के लिये रहमत बनाया और मैं ये अर्ज़ कर चुका हूँ कि रहमत है मसदर। कि जिसमें रहमान भी दाखिल रहीम भी दाख़िल, तो अगर नबी की सिफ़त सिर्फ एक होती तो रहमत न कहा जातां रहमत कहना बताता है कि अल्लाह की रहमानियत का मज़हर भी है रसूल (स0)। अब ज़रा गौर फरमायें कि अल्लाह रहीम है किस के लिये? मोमनीन के लिये। यानी यहाँ भी रहम करेगा और वहाँ भी रहम करेगा, रहीम है मोमनीन

के लिये तो रसूल (स0) के लिये इरशाद होता है बिलमोमेनीना रऊफुर्रहीम ये नबी मोमनीन के साथ रऊफ भी है, उनके साथ हमदर्दी करने वाला भी है, और मोमनीन के लिये रहीम भी है । यानी जिस तरह मेरी रहमत मोमनीन के लिये यहाँ भी है और वहाँ भी इसी तरह मेरा नबी रहीम है यहाँ भी और वहाँ भी। यानी ख़ाली उसकी नबूवत से फैज़ यहीं नहीं हासिल करोगे वहाँ भी हासिल करोगे। उसकी रहीमियत का मतलब है अल्लाह की रहीमियत का मतलब क़यामत में मोमनीन के लिये रहम व करम का यूँ मुज़ाहेरा करना कि गलतियां हो गयीं लेकिन तूने तौबा की मैं मोआफ कर दूँगा। कुसूर हुऐ लेकिन तूने शरमिन्दगी का इज़हार किया मैं बख्श दूँगा तो अब नबी की सिफ़त अगर रहम बयान की गयी तो अगर नबी के दामन से हमें जुदाई हो जाती कयामत में तो नबी रहीम न कहा जाता। रहीम का मतलब ये है कि यहाँ जिस तरह रहमत का ज़रीआ उसी तरह वहाँ रहमत का ज़रीआ। वो लोग जो कहते हैं कि शफ़ाअत की कोई अस्ल नहीं वो गौर करें कि अगर नबी कि शफ़ाअत वहाँ काम देने वाली न होती तो सिफ़्ते नबी रहीम न कही जाती। रहीम कह कर बताया कि वहाँ भी बख़शिश का ज़रीआ यही बनने वाले हैं (सलवात)

बहरसूरत मैंने अर्ज़ किया कि इस आय–ए–करीमा की तफ़सील में अब ज़्यादा आगे नहीं जाऊँगा और ये दोनों जुज़ आगे बिस्मिल्लाहिर्रमा निर्रहीम के सिलसिले में भी और सूरए हम्द मे जो इरशाद हुआ अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिलआलामीन। अर्रहमानिर्रहीम। तो रहमान व रहीम की तशरीह के सिलसिले में दोनों जुज़ आगे हैं। बिस्मिल्लाह के बाद इरशाद होता है अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल्लआलमीन का तर्जुमा यही करूँगा मैं कि सब तारीफें उस अल्लाह के लिये हैं जो आलमों कापालने वाला है जो आलमों का परवरदिगार लेकिन ये तर्जुमा नहीं हुआ। अरबी में तीन लफ्ज़ें हैं। तारीफ़ के लिये एक है हम्द एक है मद्ह एक है शुक्र। हम्द, मद्ह, शुक्र तीनों में तारीफ़ पायी जाती है लेकिन हर एक का महले इस्तेमाल अलग–अलग। अस्ल में जिसे उर्दू में तारीफ़ कहते हैं या फ़रसी में जिसे सताइश कहते हैं उसके अरबी में जो लफ्ज़ है उसका नाम है मद्ह।

मद्ह के माअनी उर्दू की तारीफ़ और फ़ारसी की सताईश है। बड़े इबादत करते हैं, क्या कहना फलाँ साहब अरे साहब बड़े ज़बरदस्त, बड़े इबादत गुज़ार, बड़े नेक। फलाँ साहब का क्या कहना बड़ें सख़ी कोई साएल उनके दर से ख़ाली वापस जाता ही नहीं। बड़े बहादर। क्या किया आपने? तारीफ़ की और मैंने कहा कि ये फूल कितना हसीन है उसकी महक कितनी अच्छी है कितना लतीफ़ व नाजुक है क्या किया मैंने? फूल की तारीफ़ की। मैंने कहा ये मंज़र कितना अच्छा है। ज़रा देखिये तो आफ़ताब के निकलने का मंज़र कितना खुशनुमा है ये गिरते हुऐ चश्मे। ये बहता हुआ दरिया। ये सब्ज़ा और उसमें आफ़ताब के निकलने का मंज़र कितना हसीन है। क्या किया मैंने तारीफ़ की। तो मैंने जब कहा कि फलाँ शख्स बड़ा अच्छा और नेक बन्दा खुद नेक बना। उसने नमाज़ पढ़ी इबादत गुज़ार बना उसने रोज़ा रखा, उसने लोगों के साथ नेकी की, ये उसका इख़्तेयारी अमल था। चाहता नमाज़ पढ़ता चाहता टाल जाता। चाहता इबादत करता चाहता न करता ये उसका इख़्तेयारी अमल था। जब फूल को मैंने कहा खुशबू बहुत अच्छी है तो क्या वो खुशबू उसकी अख़तियारी थी? चाहता तो पैदा करता चाहता तो न करता। ये उसकी अख्तियारी नहीं है?। किसी ने दे तो नहीं दी है। उसके इरादे का दखल नहीं। फूल की खुशबू और उसकी नज़ाकत में उसके इरादे का दख़ल नहीं उसने खुद खुशबू पैदा नहीं की। तो तारिफ उन बातों की भी होती है जो इरादों से पैदा की जायें और उन बातों की भी होती है बिला ईरादा व अख्तियार के किसी का अतिया हो। तारीफ़ दोनों के लिये आम अरबी में उसके

लिये लफ्ज़ है मद्ह। मद्ह के मआनी क्या हैं चाहे अख्तियारी सिफ़त हो या ग़ैर अख्तियारी दोनों शक्लों में मद्ह हो सकती है। लेकिन हम्द। हम्द सिर्फ़ उन्हीं सिफ़ात पर होती है कि जो अख़्तियारी हों। मैं सूरज की रोशनी की हम्द नहीं कर सकता मद्ह कर सकता हूँ मैं चाँद की ज़िया कि हम्द नहीं कर सकता मद्ह कर सकता हूँ। मैं खुशनुमा मंज़र की हम्द नहीं कर सकता मद्ह कर सकता हूँ। तो मालूम हुआ कि हम्द के लिये ख़ुसूसियत ये है कि उन्हीं अफ़आल की तारीफ़ कि जो इरादे और अख्तियार से किये जाये। तीसरी चीज़ है शुक्र। शुक्र क्या? शुक्र में भी तारीफ़ होती है लेकिन उस अच्छी सिफ़त की तारीफ़ होती है कि जिससे मुझे फ़ैज़ पहुँचा हो। किसी साहब ने मुझे भूक में खाना खिलाया और मैंने उनकी तारीफ़ करना शुरू की अरे साहब देखिये मैं कितना परेशान हाल था कोई पूछने वाला न था इतने बड़े शहर में किसी ने पूछा। यही साहब ऐसे थे कि जिन्होंने मेरी तरफ तवज्जो की और मेरी ख़बर ली और मेरा पेट भर दिया। ये क्या हुआ? तारीफ़ ये भी है। लेकिन उस सिफ़त की जिससे मुझे फ़ैज़ पहुँचा। उसको कहते हैं शुक्र। तो हम्द, मद्ह, शुक्र तीन चीज़ें हैं। हम्द के मानी अख़तियारी सिफ़त की तारीफ़। मदह के मआनी बस तारीफ़ चाहे अख़तयारी सिफ़त हो या ग़ैर अख़्तियारी। शुक्र के मआनी उन सिफ़तों की तारीफ़ जिनसे मुझे फ़ायदा पहुँचा हो। जिनसे मैंने फ़ैज़ हासिल किया हो। तो यहाँ पर क्या इरशाद होता है अलहम्दो लिल्लाह मैं हम्द कर रहा हूँ अल्लाह की। यानी ये सुन लो कि अल्लाह की सिफ़ते कमाल गैर अख़तयारी नहीं। उसकी फ़ैज़ रसानी धूप की तरह की नहीं। उसकी फ़ैज़ रसानी हवा की तरह की नहीं। उसकी फैज़ रसानी दरया की तरह की नहीं, बल्कि वो फैज़ रसाँ ऐसा है कि जो अपने इरादे से फैज़ पहुँचाता है। जो अपने अख़तियार से फ़ैज़ पहुँचाता है। ज़रा तवज्जो फरमायें उसका नतीजा क्या हुआ कि फूल तो हर एक खुशबू देगा। पानी तो हर एक की प्यास बुझाएगा लेकिन आप मेरे पास आये और मुझ से इल्म हासिल करना चाहा, बफरज़े मोहाल मैं अर्ज़ कर रहा हूँ कि मैं पढ़ा लिखा हूँ और आप चाहते हैं कि मुझ से फैज़ हासिल करें मैंने पहले जाँच की कि आप में सलाहियत भी है कि इल्म को बरदाश्त कर सकें? जिसमें देखा सलाहियत नहीं उसको फैज़ से महरूम रखा। साएल आया दरवाज़े के ऊपर मैंने देखा पैसा तो ले जायेगा कहीं जुऐ में तो नहीं उड़ा देगा? ले तो जायेगा कहीं सनीमा तो नहीं देख डालेगा? जिसको देखा सही इस्तेमाल करेगा। उस तक फ़ैज़ पहुँचाया जिस को देखा सही इस्तेमाल न करेगा उसको दरवाज़े से वापस कर दिया।

तो मालूम हुआ कि एक है गैर इरादी और एक है इरादी। ग़ैर इरादी हर एक तक पहुँचता है और इरादी मुसतहक़ तक पहुँचता है। हकदार के लिये होता है। गैर इरादी में माँगने की ज़रूरत नहीं। अरे फूल तो खुशबू देगा ही चाहे कहिये कि नाक को मोअत्तर कर दो और चाहे न कहये। वो तो खुशबू देगा ही। इसमें माँगने कि हाजत नहीं। अगर मद्ह, कर दी जाती, लफ्ज़े मद्ह इस्तेमाल किया जाता अलहम्दोलिल्लाह तो दुनिया को शुब्हा होता कि अरे वो तो फ़ैज़ पहुँचाएगा ही तो फिर माँगने की क्या हाजत कि दोआ का दरवाज़ा बन्द हो जाता । तो नेदा दी गयी। अलहम्दोलिल्लाह हर हम्द अल्लाह के लिये है यानी उसके इरादे और अख्तियार की पाबन्द है उसकी बारगाह में आ। अरज़ो नयाज़ कर अगर वो मसलहत समझेगा तो मालूम हुआ कि दोआ का दरवाज़ा खोलना था। तो इरशाद हुआ अलहमदोलिल्लाह हम्द व सताइश अल्लाह के लिये है। (सलवात)

बहरसूरत खुदा का शुक्र है और जितना भी खुदा का शुक्र अदा करूँ वो कम है कि दुनिया की कोई क़ौम ऐसी नहीं है कि जो हालात के तगइयुर व तबदीली के बाद उसी तरह जमी और डटी रहे जैसा कि आप। बड़े से

बड़े फलाँ साहब आने वाले थे मिनिस्टर साहब। कई महीने पहले से इंतेज़ाम, स्टेज बना हुआ पहले से ऐलान लोगों को दावत नामे भेजे गये लेकिन अब जो तूफ़ानी बारिश शुरू हुई तो हर तरफ सन्नाटा न कोई लेने जाता है न कोई जलसे में आता है कुछ भी नहीं। अरे साहब क्या जायें मजबूरी थी इतनी तेज़ बारिश कैसे लोग आते लेकिन ये फैज़ है ज़िक्रे हुसैन (अ0) का कि इंकेलाब आते रहेंगें और दोस्तदार जमा होते रहेंगें। (सलवात) अभी तो कई साल बारिश में मोर्हरम को आना है तो क्या हम बारिश की वजह से ज़िक्रे अहलेबैत को छोड़ देंगें। नहीं हमने तो तीरों और तलवारों में नाम लिया तो बरसते बारिश के कतरों में कैसे अहलेबैत (अ0) का ज़िक्र छोड़ सकते हैं और मैं सच अर्ज़ करता हूँ कि आप दिखा देते हैं कि हम बनावट के लिये अहलेबैत (अ0) का नाम नहीं लेते हैं, हम दिल से मोहब्बत करते हैं। मोहब्बते अहलेबैत (अ0) के इमतेहान सख़्त से सख़्त लिये गये हैं और हम हर मंज़िल पर साबित कदम रहे हैं तो अब भी साबित कदम रहेंगें। बहरसूरत तो मैं अर्ज़ कर रहा था अलहमदोलिल्लाहे रब्बिलआलमीन ख़ाली यही नहीं कि तारीफ़ है अल्लाह के लिये जो आलमीन का रब है बल्कि अलहम्द। अलहम्द के क्या मआनी? हर हम्द हर सताईश हर तारीफ़ ये हर तारीफ़ का क्या मतलब ज़रा गौर तो करें कभी भी किसी चीज़ की भी किसी भी ज़बान पर कोई तारीफ़ आये वो तारीफ़ उसकी नहीं अल्लाह की है। जिसकी भी तुम और जब भी तारीफ़ करोगे, इधर तारीफ़ का जुमला किसी के लिये आया और उधर कुरआन पुकारा ये उसकी नहीं अल्लाह की तारीफ़ है वही नहीं कि जो अल्लाह को मानते हैं अल्लाह के न मानने वाले उसके मुंकिर, मुलहद बेदीन ये कहने वाले कि अरे साहब ये तो फरसूदा खयालात हैं कि किसी ने इस दुनिया को पैदा किया है। हम है। मुतजदिद, हम है। रौशन ख़याल, हम हैं पढ़े लिखे। हम जानते हैं कि ये तो हम हैं ये जेहालत है कि इस कायनात के लिये किसी खालिक को मानिये। वो अपने तजद के ज़ौक में मुंकिरे उलूहियत। किसी की तो तारीफ़ करेंगें। कभी उनकी ज़बान पर किसी के लिये तो तारीफ़ का जुमला आयेगा। किसी अपने लीडर ही कि तारीफ़ करें कि साहब क्या कहना है उनका उन्होंने तो पूरी क़ौम का ज़हन बदल दिया। उन्हीं की बिना पर तो ये इंकेलाब आया कि आज हकुमत क़ायम है। तारीफ़ की आपने बड़ा अच्छा काम किया उन्होंने, अरे साहब जितने थे दौलतमंद सब की दौलत छीन के बांट दी। कभी अपनी तारीफ तो कर ही देंगें। आज तो मैंने ऐसी तकरीर कर दी कि बड़े–बड़े मज़हब वालों के ज़हन साफ़ हो गये होंगें। बड़े अल्लाहके मानने वालों में खलभली मच गयी होगी। अल्लाह की रद में ऐसी तरीफ़ की और ऐसी तकरीर कर दी कि मैं तो साहब खुद झूम रहा था चाहे कोई झूमे या न झूमे कोई तारीफ़ का जुमला किसी ने कभी भी कहा और कुरआन पुकारा अलहम्दोलिल्लाह ओ मेरे न मानने वाले तूने मेरी रद में अपनी तकरीर की तारीफ़ की है लेकिन ये तारीफ़ करे वो सब तारीफ़ें मेरी हैं।

मेरी समझ में नहीं आया कि उसका मतलब क्या हुआ। मैं अपनी तारीफ़ कर रहा हूँ अल्लाह कह रहा है मेरी तारीफ़। मैं अपने दोस्त की तारीफ़ कर रहा हूँ। अल्लाह कह रहा है मेरी तारीफ़। अजब ज़बरदस्ती है साहब। माने न माने आप कहते है तारीफ़ मेरी कर रहे हो मगर हकीकत यही है कि जब कुरआन ने कहा अलहम्दोलिल्लाह हर तारीफ़ अल्लाह की। कभी किसी की तारीफ़ करो वो अल्लाह ही की तारीफ़ होगी। क्यों? मैंने बहुत से मक़ासिदों में शिरकत की है आपने भी मक़ासिदों और मुशाएरों वगैरह में शिरकत की होगी। मिसाल दे रहा हूँ। शायर शेर पढ़ रहा है और तारीफ़ में लोग खड़े हुऐ जा रहे हैं क्या कहना ऐसा शेर तो हमने आज तक सुना ही नहीं। अरे साहब ऐसी तखइयुल तो आज तक किसी साहब ने पेश की ही नहीं। ये

शेर तो सहले मुम्तनाअ है। ऐसी लफ़्ज़ें जमा कर दीं जो फ़साहत व बलागत का निचोड़। तारीफ़ कर रहे हैं आप और एक मरतबा मैंने देखा कि शेर तो उड़ गया और शायर साहब झुक–झुक के तस्लीमें कर रहे है।, बंदानवाज़ी है ग़रीबपरवरी है मुसाफिरनवाज़ी है कि बाहर से आया हुआ हूँ इज़्ज़त अफज़ाई कर रहे हैं। अभी मुझे आता ही क्या है भई लखनऊ वाले उनके सामने मैंने मुँह खोल दिया यही मेरी बड़ी जुर्रत थी आप तो मेरा दिल बढ़ा रहे हैं। ये सब कह रहे हैं वो और आपने कहा कि आप से क्या मतलब, आपको थोड़ी कुछ कह रहा था। एक लफ़्ज़ मैंने आपके लिये नहीं कहा। मैं तो शेर की तारीफ़ कर रहा हूँ। शेर में लफ़्ज़ें ऐसी, शेर में तखइयुल ऐसी कि ऐसा शेर नहीं सुना। मैं शायर की तारीफ़ नहीं कर रहा हूँ मैं तो शेर की तारीफ़ कर रहा हूँ। मगर शायर साहब कहे गये कि जी शेर ही कि सही मगर तारीफ़ शेर की नहीं अस्ल में मेरी है। लफ़्ज़ें अगर खुद से आगे बढ़ गयी होतीं तो शेर की तारीफ़ थी। तखइयुल खुद से सिमट के आ गयी होती तो शेर की तारीफ़ थी जब लफ़्ज़ें मैंने बढ़ाई, जब तखइयुल मेरी है, जब शेर मैंने कहा है तो तारीफ़ शेर की करो वो तो तारीफ़ शायर की हो जायेगी जब सनअत की तारीफ़ शेर की करो वो तो तारीफ़ शायर की हो जायेगी जब सनअत की तारीफ़ करें तो सनाअ की तारीफ़ होगी। क्या अच्छा मज़बूत इमाम बाड़ा बनाया है कितना अच्छा आपने इसके लिये इंतेज़ाम किया। ये किया वो किया सब जब आप तारीफ़ करेंगें तो इस नक़्शा बनाने वाले कि तारीफ़ हेगी जिसने नक़्शा बनाया। उस इंजीनियर की तारीफ़ होगी जिसने उसको बनाया तो मालूम हुआ हर चीज़ में तारीफ़ जब सनअत की की जाये तो सानेअ की हो जाती है। किताब कि तारीफ़ करें मुसन्निफ़ की तारीफ़ हो जायेगी। किसी तस्वीर की तारीफ़ करें मुसव्विर की तारीफ़ हो जायेगी तो जब सनअत की तारीफ़ की जाए तो तारीफ़ सानेअ कि हो जाती है अगर इस काएनात में अल्लाह के अलावा किसी और का भी कुछ बनाया हुआ होता तो तारीफ़ उसकी होती तो जब सब उसका बनाया हुआ है तो जब तुमने तारीफ़ की किसी चीज़ की अल्लाह की तारीफ़ होगी। (सलवात)

अगर फूल में खुशबू खुद से आई होती तो फूल की तारीफ़ तुम ने खुशबू की तारीफ़ की। खुशबू देने वाले की तारीफ़। अगर हवा खुद से चली होती तो हवा की तारीफ़। तुमने हवा की तारीफ़ की कितनी सुहानी हवा कितनी अच्छी हवा चल रही है? खुदा की तारीफ़। तुमने मौसम की तारीफ़ की कितना सुहाना मौसम उसकी तारीफ़ जिसने ये मौसम बनाया। तुमने अब्र और बारिश की तारीफ़ की उसकी तारीफ़ की जिसने अब्र को बारिश का रास्ता दिखाया। गरज़ कि जब भी सनअत की तारीफ़ करोगे तो सानेअ की तारीफ होगी। नहीं–नहीं तुमने अपनी तारीफ़ की मैं ऐसा मैं वैसा। मगर ये बताओ कि तुमने अपनी तारीफ की? तुमहारे ज़हन में सलाहियत किसने दी सोचने की। तुम्हारी अक़्ल में कुवत किसने दी समझने की। आप ने जो अपनी तारीफ़ की ऐसी तक़रीर कर दी आज तक ऐसी तक़रीर हुई ही नहीं थी। ये तक़रीर करने की सलाहियत किस ने दी? ज़बान को किसने नुतक़ की ताक़त दी? दमाग को किसने सोचने की ताक़त दी? तो हर सनअत की तारीफ़ सानेअ की तारीफ़ होती है। काएनात में अल्लाह के अलावा किसी और की सनअत होती तो उसकी तारीफ़ होती। जब सब कुछ उसी का बनाया हुआ है तो किसी कि तारीफ़ करो उसकी तारीफ़ होगी।

मिसालों से मतलब वाज़ेह होता हैं मैं खड़ा हुआ तारीफ़ कर रहा हूँ। क्या उम्दा आलीशान इमारत है! कितनी मज़बूत बनायी है। नक़शा उसका कितना अच्छा है, रंग व आमेज़िशउसमें कितनी है, और मैंने देखा कि एक साहब मुसकुरा रहे हैं मेरे पहलू में खड़े हुऐ और कपड़े उनके मामूली है।। नहीं है ज़रदार शेरवानी वगैरह मामूली कुर्ता या जामा पहने मुस्कुरा रहे हैं। मैंने कहा आप क्यों मुसकुरा रहे हैं? कहा

साहब ये मैंने ही तो बनाया है, ये नख़्शा मैंने ही बनाया था उसकी जो हदूद क़ायम हैं वो मैंने क़ायम की थीं। ये सब कुछ मेरा ही बनाया हुआ है। अब मैंने उनको देखा कि साहब कोई बनाने वाला होता बड़ा इंजीनियर तो वो कोट पतलून में होता। ये मामूली शेरवानी पहन के थोड़ी खड़ा होगा? मैंने कहा ज़रा आप अपनी सूरत तो देखिये आपने बनाया होगा इतना उम्दा इतना मज़बूत ऐसा ये आपका बनाया हुआ है।? इंकार। लेकिन क्या मेरे इंकार से जब मैंने तारीफ़ की तो उसकी तारीफ़ न रही। बनाने वाले को न पहचानो, बनाने वाले के मुंकिर हो लेकिन जब सनअत की तारीफ़ करोगे तो सानेए की तारीफ़ हो ही जायेगी। (सलवात)

तुम्हारे इरादे का दखल नहीं है, ये शर्त नहीं है कि बनाने वाले को पहचानो तभी उसकी तारीफ़ हो जब भी सनअत की तारीफ़ होगी सानेअ की तारीफ होगी। अच्छा खैर सब अल्लाह ने बनाया तो उसकी तारीफ़ अरे भई कुछ मैंने तो भी बनाया है जो मैंने बनाया है उसकी तारीफ़ किजिये तो मेरी तारीफ़ होगी। ये लाऊड स्पीकर जो मेरी आवाज़ को इतनी दूर पहुँचा रहा है ये आज से पचास बरस पहले कब था? ये तो मैंने बनाया। अगर अल्लाह बनाता तो हमेशा से होता और ये बिजली का खटका दबा दिया और रोशनी हो गयी। और एक दम से चली गयी तो हम बैठे हैं हक्का बक्का। ये किस की है? ये अल्लाह ने बनायी है मैंने बनायी है और ये जो भाप से इंजन चला रहा हूँ मैं कि पहुँच गये दो दिन में बमबई और इतनी बड़ी–बड़ी जो मशीनें बना ली हैं मैंने जो चल रही हैं जिनसे कि न मालूम कितनी सनअतें इजाद कर लीं ये किस ने बनायी हैं यह मैंने बनाई है या अल्लाह ने? ये तोड़ जो दिया है छोटे से ज़र्रे को और जिससे इतनी ताक़त पैदा हो गयी हतनी कुवत पैदा हो गयी कि आज पूरी दुनिया थरथरा रही है कि कहीं गलत इस्तेमाल हुआ तो सब बरबाद तो ये किसने ईजाद किया है? ये तो मैंने बनाया, ज़मीन अल्लाह ने बनाए सितारे अल्लाह ने बनाए, दरया अल्लाह ने बनाए, पहाड़ अल्लाह ने बनाए तो उन सब में अल्लाह की तारीफ़ और जो मैंने बनाया उसमें मेरी तारीफ़। मगर मैं पूछता हूँ। हर बनाने वाले से कि हजूर ये बता दें कि आपने बनाया क्या है? बड़े से बड़े सनअत कार से मैं पूछता हूँ कि कोई साहब तो बतायें कि बनाया क्या है? उन्होंने कहा जी भाप की ताक़त मैंने इजाद की जिससे ये इंजन चल रहे हैं। तो हज़ूर सौ बरस पहले भाप में क्या इतनी ताक़त नहीं थी? अगर सौ बरस पहले हम इसी भाप से काम लेते तो क्या इंजन नहीं चल सकते थे? मशीनें नहीं चल सकती थीं? ताक़त तो भाप में हमेशा से थी क्या अगर हज़ार बरस पहले हम दरिया के तेज़ धारे से बिजली पैदा करना चाहते तो क्या पैदा नहीं हो सकती थी? हम ने आज सीखा थी तो ताक़त हमेशा से छोटे–छोटे ज़र्रे कि जिसको तोड़ कर आपने इतनी ताक़त पैदा कर ली क्या आज के दस हज़ार बरस पहले किसी जर्रे को तोड़ा जाता तो ये ताक़त नहीं पैदा होती? हज़ूर सब चीज़ें मौजूद थीं आपको इस्तेमाल का तरीक़ा नहीं मालूम था। आज जो तरीक़ा सीख ले वो मूजद बन जाये, तो जो ताक़त देदे वो ये न कहे कि ये सब मेरा पैदा किया हुआ है।

बेहतरीन अमरीका या जापान का बना हुआ मोटर बहुत उम्दा और मैं बैठा कभी ये करता हूँ कभी वो करता हूँ और अपनी जगह से खिसकता ही नहीं और आप जो जानने वाले थे आकर बैठे ज़रासे कुंजी घुमाई ज़रा सा पैर दबाया और वो हरकत में आ गया। फ़र्क क्या हुआ? चल पहले भी सकता था मैं चलाना जानता न था। आपने चलाना सीख लिया आपने चला लिया। बस यही चीज़ें कायनात की ताकतें। किसी ने कोई ताकत पैदा नहीं की है इस्तेमाल सीखा है। तो इस्तेमाल सीखने वाले मूजिद बन के दावाए हम्द करें तो जो ताकतें देने वाला है वो क्यों न कहे अलहम्दो लिल्लाह हर हम्द मेरे लिये है, हर तारीफ़ मेरे लिये है जिसने ये ताकतें

दीं।(सलवात)

और मैं कहता हूँ कि सब कुछ आपने बना लिया। अरे मान लूँ कि सब कुछ आपने बनाया है लेकिन ज़रा ये तो बताइये कि वो उंगलियाँ किस ने बनायीं जिससे बना है? और वो दमाग किसने बनाया जिससे इजाद किया है? और वो अक़्ल किसने दी जिसके सहारे सब कुछ सीखा? मैं कहूँगा सब कुछ आपने बनाया मगर आपको किसने बना दिया? अरे वो जो आपका बनाने वाला है जिसने कहा "कर्रमना बनी आदम" वो न कहे कि जो कुछ इजाद करते जाओ वो मेरी दी हुई सलाहियतों के तुफ़ैल में तो है? सब मेरी अता करदा सलाहियतों की बिना पर तो है? लेहाज़ा अलहम्दो लिल्लाह हर हम्द हर सताईश हर तारीफ़ उस अल्लाह के लिये जो काएनात का रब जो काएनात का पालने वाला है। एक अलहम्द है लेकिन ये बलाग़ते कलामे इलाही है कि उस एक हम्द में हक़्क़े हम्द अदा हुआ। उस ख़ालिके काएनात उस मालिके अरज़ो समा उस अज़ीम व अज़ाम व अकबर की तारीफ़ की जो किसी ज़हन में समा न सके जो किसी वहम में आ न सके जो वहम व ख़याल से बलन्द उसकी तारीफ़ तो क्या करता जब तक मैं न बताता मेरे लिये लफ्ज़ इस्तेमाल कर "अलहम्द" हर तारीफ़ अल्लाह के लिये।

और उसको बताया इमाम ज़ैनुलआबेदीन (अ0) ने। आपकी सवारी का एक जानवर कहीं निकल गया था, कहीं खो गया था नज़र मानी आपने, फरमाया कि अगर ये जानवर मुझे मिल गया तो मैं अल्लाह की उस तरह हम्द करूँगा जो हम्द करने का हक़ है। जिससे हक़्क़े हम्द अदा हो जाये। मिल गया वो और मय ज़ीन व लजाम के मिल गया कुछ ज़ाया नहीं हुआ था। अब लोग सुन रहे हैं कि इमाम (अ0) ने कहा था कि मैं ऐसी हम्द करूँगा जो अल्लाह के लायक़ है। अब देखें किस अन्दाज़ से हम्द होती है क्या अल्फ़ाज़ इस्तेमाल होते हैं। कलम व दावात लिये बैठे हैं कि आज तो हक़्क़े हम्द अदा कर रहे हैं इमाम ज़ैनुल आबदीन (अ0)। मगर जैसे ही मिला तो आपने फ़रमाया "अलहम्दोल्लिाह" अब लोग समझ रहे हैं कि उसके बाद कुछ और कहेंगें बस ख़ामोश। कहा आक़ा आपने क्या कहा था वही हम्द करूँगा जो लायक़ हो उसके। कहा क्या कुछ रह गया? क्या हक़्क़े हम्द अदा नहीं हुआ तो इसी लफ्ज़ में अल्लाह ने अपनी तारीफ़ की है। क्या अगर वो तारीफ़ करेगा तो नाक़िस रह सकती है? उसने उस तरह तारीफ़ की है जो हक़्क़े हम्द है उसका।

तो जितनी सिफ़त बलन्द होती जायेगी उतनी तारीफ़ व सिफ़ात खुलते जायेंगें। मैं इब्तेदा में जब मजलिस पढ़ता था रट के (हाँलाकि कभी इसका मौका नहीं हुआ) वालिदे माजिद ने इब्तेदा से उन्होंने आज तक मुझे कोई मसवेदा लिख कर ही नहीं दिया, क्या भई रटने का मैं आदी नहीं तुम टूटी फुटी जिस तरह पढ़ना हो खुद पढ़ो जैसा मैंने कहा कि जब इब्तेदा में जब मजलिस पढ़ता था मसअलन रट–रट के। कहीं भूल गया। कहीं अटक गया। अब फिर ढूँढ़ रहा हूँ कि लफ़्ज़ कहाँ चली गयी? रफता–रफता तक़रीर की मशक हो गयी। अब बैठ के घंटा डेढ़ घंटा आप लोगों का वक़्त ज़ाया कर देता हूँ। तो एक वक़्त वो था कि जब इब्तेदाई तक़रीर थी उस वक़्त का एक कैसेट भरा हुआ था और किसी साहब के सामने वो कैसेट पेश कर दिया गया अब जो देखा कि भूल गये बीच में और अटक गये और लफ़्ज़ें गलत। कहा अरे भई यही तक़रीर करते हैं। कहा जी नहीं ये तो इब्तेदाई तक़रीर है अब सुनिये चल के। एक साहब ने शायरी शुरू की थी इब्तेदाई दौर के वो अशआर सुनिये आपने कहा बड़ी तारीफ़ सुनते थे यही उनके अशआर हैं? इस ज़माने के, तो मालूम हुआ जैसा सनअत का नमूना होता है, वैसी ही सानेअ की मारेफत होती है। लेहाज़ा अगर अल्लाह की सही मारेफ़त हासिल करना है तो शाहकार कुदरत देखों। उनको देखो जो जमाल व कमाले इलाही के आइने हैं। उनके ज़रीऐ से

पहचानो कि जब सनअत ऐसी है तो सानेअ कैसा होगा जब बनने वाले ऐसे हैं तो बनाने वाला कैसा होगा (सलवात) और उनके दरवाज़े पर जो कमाले सनअते इलाही का नमूना हैं उनके ज़रीऐ से पहचानो। ऐसे बन्दे हैं तो खुदा कैसा होगा। जब बनाये उसने ऐसे हैं तो बनाने वाला कैसा होगा?

अब ज़रा तवज्जो फरमायें अभी जो मैंने मिसाल दी अपनी ही। कि जब शुरू की थी मजलिस तो और था आज कुछ और पढ़ता हुँ अपनी हद तक कुछ तो आगे बढ़ ही गया। इसी तरह कोई शायर है उसकी इब्तेदाई शायरी और बाद में कमाले फन। ज़रा तवज्जो फरमायें जो बात अर्ज़ कर रहा हूँ। तो हर सानेअ रफ़्ता—रफ़्ता तरक़्क़ी करता है इब्तेदा कम होती है तरक्की की मंज़िल में बढ़ता जाता है। इब्तेदाई नमूना नाक़िस होता है मश्क़ के बाद कमाल आ जाता है। ज़रा तवज्जो फ़रमायें। अगर अल्लाह भी अपने कामिल नमूनों को बाद में बनाता और नाक़िस पहले बनाता तो दुनिया कहती कि रफ़्ता—रफ़्ता शायद मश्क से कमाल आया। लेहाज़ा उसने कमाल पहले बना लिये नाक़िस बाद में बनाए (सलवात) जो कमाले सनअत का नमूना थे उनको पहले पैदा किया। ''अव्वलो मा ख़लकल्लाहो नूरी'' अल्लाह ने सब से पहले मेरे नूर को बनाया जो कमाले सनअत का नमूना हैं उन्हें पहले खल्क किया। नाकिस बाद में बनाए। ये न कहना कि रफ़्ता—रफ़्ता बाद में कमाल आया और क्या कहना मैं अर्ज़ करूँगा कि इब्तेदा में एक बनाया और आख़िर में इसी एक से ज़हूर की मंज़िल में चौदह नज़र आये। बस यूँ अर्ज़ करूँ कि एक थी मंज़िले ख़ेफ़ा और एक है मंज़िले ज़हूर। मंज़िले ख़ेफ़ा में एक मंज़िल ज़हूर में चौदह। (सलवात)

सिर्फ समझाने के लिये मिसाल, मैंने चाहा कि अपने खेत में अब की गेहूं ही गेहूं हों। जाकर गेहूं खेत में छिड़क दिये। अब जो शाख फूटी तो एक गेहूँ के दाने से वो शाख़ बलन्द हुई थी और बढ़ी और बढ़ कर बाली आई और फूल बने और फूल में तुख्म पैदा हुआ और तुख्म पका और अब जो उस बाली को तोड़ कर गिनातो बोया था एक दाना मिले बढ़ कर दाने। तो मंज़िले खेफा में जब छुपाया था तो एक और मंज़िल ज़हूर में जब आए ता बढ़ के। कुदरत ने भी यही कहा कि नूर छिपाया जायेगा इब्तेदा में तो एक होगा और आलमे ज़हूर में आयेगा तो चौदह होंगें। जिनमें हर एक अपनी—अपनी मिसाल (सलवात) जब बोया था तो क्या था गेहँ जब बढ़ के मिला तो मैंने कहा वो तो एक था, बदल गये होंगें। लेकिन जब बाली से निकाला तो वही शक्ल वही अंदाज़ वही सीरत वही सूरत सब कुछ वही मिला। अरे जब अस्ल एक है तो बदल कैसे जाये? तो कुदरत ने भी यही कहा कि मंज़िले ख़ेफ़ा में नूरे मोहम्मदी होगा तो मंज़िले ज़हूर आयेगी तो रसूल कहेंगें " अव्वलोना मोहम्मद औसतोना मोहम्मद व आख़ेरोना मोहम्मद व कुल्लोना मोहम्मद। और मैं सच अर्ज़ करता हूँ कि ये सिर्फ़ ज़माने को समझना था कि रसूल ने फरमाया था कि ''हुसैनो मिन्नी व अनामिनल हुसैन'' हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से हूँ। वरना हक़ीक़त ये है कि हसन (अ0) के लिये भी यही है कि " हसनो मिन्नी व अनामिनल हसन'' इमामे ज़ैनुल आबेदीन (अ0) के लिये भी है कि ज़ैनुल आबेदीनो मिन्नी वअना मिनल ज़ैनुल आबेदीन'' इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) के लिये भी यही है। क्यों इसलिये कि नूर एक है। इसलिये कि रूह एक है।

और एक बात अर्ज़ करूँ लोगों ने और भी लक़ब दिये हैं मगर क्या कहा ''चार दोस्त '' मेरे दोस्त बहुत से हो सकते हैं। लेकिन जब मंज़िल आयी अहलेबैत (अ0) की तो अब क्या कहा जाता है? पाँच ख़ानदान वाले या चार अज़ीज़, चार कराबतदार? अजी नहीं यहाँ अब हर एक की ज़बान पर है पंजतन। अब यहां पँजदोस्त नहीं कहा जाता अब यहाँ पंज शख़्स नहीं कहा जाता हर मुसलमान कहता है पँजतन। गोया कुछ ज़हनों में ये रासेख़ हैं कि तन उनमें

अलग–अलग हैं रूह उन सब में एक ही है जो कारफरमा है। एक सीरत है, एक अंदाज़ है, एक किरदार है एक गुफ़तार है जिसको देखो वो अपने ज़माने का मोहम्मद ही नज़र आ रहा है। (सलवात)

और क्या कहना उनका कि मासूम तो मासूम इस्मत का तो लाज़ेमा है कि फ़र्क़ न हो। क्या कहना उस घराने का कि जिनको इस्तेलाहन मैं मासूम नहीं कह सकता। इस्तेलाहन का लफ़्ज़ याद रखियेगा। जिनको इस्तेलाहन मैं मासूम नहीं कह सकता। लेकिन जिनकी सीरत और जिनका किरदार इतना बलन्द है कि मासूम खुद गवाही दे रहा है। ये अज़ीम गवाही है। मेरी तारीफ़ नहीं है ये देखा जाता है कि कौन क्या कर रहा है? मेरी तारीफ़ नहीं है, मासूम इमाम किसी की तारीफ़ कर रहे हैं। तो उसमें न मुबालग़ा होगा और न हद से बढ़ना होगा। मगर क्या कहना उसका कि जिसके लिये मासूम इमाम मदह कर रहा हो (सलवात) अशबाहुन नास ख़ल्का व मनतेका बेरसूलिल्लाह मासूम इमाम तारीफ़ कर रहा है कि ये मेरा बच्चा वो है कि जो ख़ाली सूरत कह दिया होता तो हो सकता था कि एक खानदान में एक सूरत के हो जाया करते हैं फरमाते हैं अशबहुन्नास ख़ुल्का व मनतका। अली अकबर वो है जो खुल्क में भी सीरत व किरदार में भी शक्ल व सूरत में भी मंतक़ी गुफ़्तगू के अंदाज़ में भी अशबहुन्नास तमाम इंसानों में सब से ज़्यादा मेरे नाना से मुशाबेह है। ये मदह की जा रही है उस नौजवान की कि जिसके ज़िक्र के लिये आज का दिन मखसूस है। छटी मोहर्रम है आज और आज आप हुसैन (अ0) को उनके जवान का पुरसा देते हैं। रोज़ आप रसूल (स0) को हुसैन (अ0) का पुरसा देते थे और आज हुसैन (अ0) को उनके फरज़न्द का पुरसा देना है। मैं सच अर्ज़ करता हूँ कई मरतबा कह चुका हूँ फिर कह रहा हूँ कि मुझे कोई अपने इल्म का गुर्रा नहीं मुझे अपनी जेहालत का एकरार है। मुझे कोई दावा नहीं कि मेरी नज़र बहुत वसीअ है। लेकिन बस इतना ही जानता हूँ कि मैंने नहीं देखा कि हुसैन(अ0) ने ख़ैमे में किसी को रूख़सत होने के लिये भेजा हो। अब्बास (अ0) गये ख़ैमे में मश्क लेने। हुसैन (अ0) ने नहीं कहा जाओ रूख़सत हो आओ। क़ासिम (अ0) गये ख़ैमे में मगर क्यों मादरे गिरामी चचा मरने की इजाज़त नहीं देते। मैं नहीं जानता कि हुसैन (अ0) ने किसी को रूख़सत के लिये भेजा हो लेकिन जब अली अकबर (अ0) आये। ऐ बाबा मुझे भी मरने की इजाज़त दिजिये। किस दिल से इजाज़त दें? एक मरतबा कहा कि मुझ से इजाज़त लेने से पहले ज़रा ख़ैमे में बीबियों से तो रूख़सत हो लो। मुमकिन है कहा हो। ऐ अली अकबर (अ0) मेरा ही हक नहीं अरे एक बीबी वो है जिसने अठ्ठराह बरस पाला है। मुझ से ज़्यादा ज़ैनब का हक़ है, इजाज़त लेना है तो ज़ैनब (अ0) से इजाज़त लो। मुमकिन है कहा हो बेटा अरे ज़रा जाकर माँ का दिल तो संभाल दो ज़रा उम्मे लैला से तो रूख़सत हो लो ज़रा सकीना व रबाब से तो रूख़सत हो लो अकबर (अ0) के लिये मुशकिलों पर मुशकिलें। अरे एक बाप से इजाज़त लेना फिर भी आसान था अब क्यों कर समझाए उम्मे लैला को? ऐ मादरे गिरामी मुझे निसार कर दीजिये। क्यों कर समझायें ज़ैनब (अ0) को ए फुफी अठ्ठारह बरस की कमाई हूँ मगर राहे खुद में जाने दिजिये और सब को समझा लें मगर जब कमसिन बहन दामन पकड़ ले। ''ऐ भय्या किस पर छोड़ के चले। ऐ भय्या कहाँ चले? ''अब सकीना को क्यों कर समझायें। मै। सच अर्ज़ करता हूँ हुसैन (अ0) ने अली अकबर (अ0) को बड़ी मुशकिलों में डाल दिया। मैंने तारीख़ में वो तफ़सील नहीं देखी कि उम्मे लैला से क्या कहा। रबाब को क्योंकर समझाया? सकीना से क्यों कर रूख़सत हुऐ? किस–किस तरह बीबियों से इजाज़त ली? मगर तफ़सील नहीं इजमाल में हर चीज़ सिमट गई, क्योंकर ख़ैमे से निकले होंगें? हमीद बिन मुसलिम कहता है मैंने देखा बहुत देर गुज़र गयी

थी हुसैन (अ0) की तरफ़ से कोई नहीं आया था। मै। सोच रहा था कि अब हुसैन किसको भेजते हैं मेरी नज़र जो पड़ी तो मैंने देखा कि हुसैन (अ0) के ख़ैमे का परदा कभी उठता है कभी गिर जाता है। अब जो ग़ौर किया तो देखा अली अकबर (अ0) निकलना चाहते हैं बीबियाँ हल्के में लेकर फिर पलटा लेती हैं बड़ी मुशकिल से निकले। जितनी रूकावट बढ़ती जाती है जोश बढ़ता जाता है जितनी देर लग रही है अली अकबर (अ0) के जज़बे में उतनी तेज़ी आती जाती है। किस तरह रूाकवटें हटें? किस तरह जाऊँ किस तरह बाप पर जान निसार करूँ? बड़ी मुशकिल से इजाज़त मिली ख़ैमे से निकले। हुसैन (अ0) मशरूत इजाज़त दे चुके थे। बीबीयों से इजाज़त लेलो। अब क्या हुआ जब इजाज़त मिल चुकी बीबीयों से। बाप पहले ही मशरूत इजाज़त दे चुका था। एक मरतबा रूका हुआ जज़बहुऐ शुजाअत जोश में आया अली अकबर (अ0) ने घोड़े की लगाम ढ़ीली की। ऐढ़ लगाई बहुत तेज़ी से चला किस तरह मैदान में पहुचूँ, किस तरह बाप पर जान निसार करूँ। अली अकबर (अ0) तेज़ी से घोड़े को बढ़ा रहे थे कि एक मरतबा एक ज़ईफ आवाज़ सुनाई दी। या बुनय्या या अली अकबर! मुड़ कर देखा तो हुसैन अ0) कमर पकड़ के पीछे–पीछे चले आ रहे हैं। बाबा आप तो इजाज़त मरने की दे चुके थे। अरे अब क्यों ज़हमत कर रहे हैं? ऐ बेटा इजाज़त देदी थी। दिल नहीं मानता किसी बूढ़े बाप से पूछो जिसका जवान बेटा मैदाने जंग मे जा रहा हो बेटा दिल नहीं मानता, बेटा जब तक सामना रहे मुड़–मुड़ कर देखते जाना। हाँ हज़रात! बस दो चार मिनट और। मैं कहता हूँ ऐ फरज़न्दे रसूल (स0) अली अकबर (अ0) आपकी अकेली औलाद नहीं। अली अकबर (अ0) के अलावा भी बच्चे हैं ज़ैनुलआबेदीन (अ0) का सा फरज़न्द मौजूद, और फरज़न्द भी हुसैन (अ0) के, बेटीयां भी हुसैन (अ0) की, ऐ मौला अरे आपके और बच्चे भी हैं मगर आपके दिल की ये हालत है तो उस माँ की क्या हालत होगी, जिसकी अकेली औलाद अली अकबर (अ0) जिस की गोद में अली अकबर (अ0) के अलावा और कोई नहीं। अरे उम्मे लैला के दिल पर क्या गुज़र रही होगी? मगर मैं तारीफ़ करूँगा उम्मे लैला की, ग़ैर ख़नदान की थी, ब्याह के आ गयी थीं ख़ानदाने अहलेबैत (अ0) में, तो अहलेबैत (अ0) के ख़ानदान की शान दिखा दी कि इकलौता बच्चा मैदान में गया। कोई और माँ होती तो तड़प के निकल आती मगर उम्मे लैला ने सोचा मैं खाली माँ नहीं फ़ात्मा (स0अ0) की बहू भी हूँ अरे कोई ऐसा क़दम नहीं उठना चाहिए जिससे इस ख़ानदान के रस्मो रवाज पर आँच आ जाये। बच्चा चला गया उम्मे लैला ने क़दम न निकाला। जब दिल बहुत तड़पा दरे ख़ैमा पर आ गई। एहतियात का आलम ये कि परदा उतना नहीं हटा कि अली अकबर (अ0) नज़र आ जायें। कहीं किसी की नज़र न पड़ जाये? क्या किया? अली अकबर (अ0) को नहीं देखा मगर ज़रा सा परदा हटा कर हुसैन (अ0) के चेहरे पर नज़र गाड़ दी अरे चहीता बच्चा है अगर मेरे बच्चे पर आँच आई तो बाप का रंग उड़ जायेगा। मुझे पता चल जायेगा कि मेरा बच्चा किस मुसीबत में है। एक मरतबा उम्मे लैला ने देखा कि हुसैन (अ0) के चेहरे का रंग उड़ गया घबरा कर कहा मौला मेरे बच्चे की ख़ैर है? कहा अली अकबर ज़िन्दा है मगर एक पहलवान का मुकाबला है मशहूर पहलवान है, मेरा बच्चा भूका प्यासा है ऐ उम्मे लैला जाओ ख़ैमे में अली अकबर के लिये दुआ करो गोया मतलब ये था उम्मे लैला इतना भी बहुत है तुम्हारे लिये कि तुम ज़रा सा परदा हटाओ। ज़रा सा ख़ैमे के अन्दर चली जाओ ताकि तुम्हारी आवाज़ भी सुनाई न दे। उम्मे लैला ख़ैमे में आयीं जो हुक्म मिला था दुआ करो एक मरतबा सर के बाल खोले और बीबियों को जमा किया और हाथ उठाये आओ बीबियों मैं दुआ करती हूँ तुम आमीन कहना हाथ उठाये। ''या

(बक़िया पेज नं0 16 का ....)

कोशिशें हो रही हैं (कई बदबख्त सलमान रूश्दी पैदा हो गये हैं जो आप के दामन पर दाग़ लगाने की कोशिश कर रहे है) मैं आप के सामने एक नफसियाती (Psychological)बात कहना चाहता हूँ कि माज़ल्लाह अस्तग़फ़िरूल्लाह कोई आदमी अगर LOOSE CHARACTER का हो और वो ये दास्ताने इस्मते युसुफ़ (अ०) बयान करे तो उसकी ज़बान लड़खड़ायेगी कि नहीं लड़खड़ायेगी? अपना किरदार याद आयेगा और ज़बान लड़खड़ा जायेगी। जिस वक्त पैग़म्बर (स०) ने ये सूरा सुनाया, उस वक्त किसी दुश्मन ने ये क्यों नहीं कह दिया कि ये होता है एक नबी का किरदार। लेकिन आपका किरदार क्या है? तो पैग़म्बर का पूरा सूर–ए–यूसुफ़ सुनाना और ज़बान का न लड़खड़ाना और किसी का पैग़म्बर (अ०) पर एतराज न करना, इस बात की दलील है कि पैग़म्बरे पाक (स०) का दामन भी हर गर्द से पाक था।

''मस्जिदें अलग–अलग होने से मुसलमानों के बीच ग़लतफ़हमियाँ पैदा हो गईं''

मुसलमानों के बीच बड़ी ग़लतफ़हमियाँ (Misunderstandings)हैं और ये सारी ग़लतफ़हमियाँ इसलिए हैं कि मुसलमान अल्लाह के नाम पर भी एक होने को तैयार नहीं है। ये सुन्नी की मस्जिद है, ये शिया की मस्जिद है। ये देव बन्दी की मस्जिद है, यह अहले हदीस की मस्जिद है। अल्लाह, बेचारा इतना ग़रीब हो गयाकि अब उसकी कोई मस्जिद ही नहीं रह गयी। उस बेचारे का तो माज़ल्लाह इन्तेकाल हो गया। जब इन्तेकाल हो जाता है तो जायदाद तक़सीम हो जाती है। एक बेटा था बरेलवी, एक मस्जिद वो ले गया। एक बेटा था शिया, एक मस्जिद वो ले गया। एक बेटा था देवबन्दी, एक मस्जिद वो ले गया। ये बड़ी गहरी साज़िश है। ये जो अल्लाह के नाम पर मुसलमान एक हो सकते थे, मस्जिदें अलग–अलग करना बड़ी गहरी साज़िश हो गयी। इसका नतीजा यह हुआ कि शिया जानते ही नहीं कि सुन्नी क्या हैं? सुन्नी जानते ही नहीं कि शिया क्या हैं? तो मस्जिदों के अलग–अलग होने से नमाजें अलग–अलग हो गयी। जमाअतें अलग– अलग हो गयीं। वो एक मस्जिद जो मरकज़े इत्तेहाद थी वह भी खत्म हो गयी। अब लड़ते रहिये! दोनों में एक दूसरे के लिए ग़लत फहमी पैदा हो गंई यह (GAP OF COMMUNICATION) का नतीजा है। शियों में गलतफहमियां पैदा हो गयीं सुन्नियों में के लिए और सुन्नियों में गलतफ़हमियाँ पैदा हो गयीं शियों के लिये।

(बक़िया पेज नं0 14,.....................)

रूददो युसुफ़ अला याकूब''ऐ यूसुफ़ (अ0) को याकूब (अ0) से मिलाने वाले अरे मेरे अली अकबर को मुझ से मिला दे। इधर उम्मे लैला की दोआ ख़त्म हुई उधर हुसैन ने आकर मुबारकबाद दी खुदा मुबारक करे तुम्हारा बच्चा कामयाब हुआ। मैं कई मरतबा पढ़ चुका हूँ मेरे दिल की बात है।

मैं जानता हूँ कि जब से करबला में आये थे अहलेबैत (अ0) कोई मुसकुराया नहीं था लेकिन अब फत्ह व कामरानी का मशरादा बना तो उम्मे लैला ने आँसू पोंछे। दिल में एक मसररत की लहर उठी मेरा बच्चा कामयाब हो गया मगर मुसकुराहट आयी ही थी कि एक मरतबा मैदान से आवाज़ आयी।

या अबता अलैका मिन्नि सलाम
ऐ बाबा अली अकबर का सलामे
आखिर कबूल हो यूँ चले कि कमर पकड़े हुऐ
या बुन्नइया अललददुनिया बादकल अफ़ा
ऐ बेटा तेरे बाद ज़िन्देगानी खाक हो गयी।